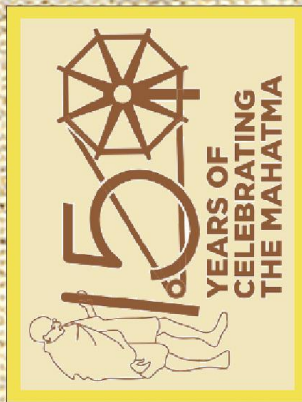


77

77

जुलाई-दिसम्बर, 2019



मध्य भारती



सनातन गौधी से संवाद

मध्य भारती



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

सागर (मध्यप्रदेश) - 470 003

दूरभाष : 91-7582-264455

ई-मेल : madhyabharati.201@gmail.com



मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN 0974-0066

UGC Cāre List, Group-C (Multi disciplināry), Sl.no.-15

‘सनातन गाँधी से संवाद’

विषय पर केन्द्रित

(अंक-77, जुलाई-दिसम्बर, 2019)

संरक्षक

प्रो. राघवेन्द्र पी. तिवारी
कुलपति

प्रधान सम्पादक

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

सम्पादक

प्रो. भवतोष इन्द्रगुरु
प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव
डॉ. आशुतोष कुमार मिश्र

विशेषांक के अतिथि संपादक

डॉ. पंकज सिंह

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. छबिल कुमार मेहेर



डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय

सागर (मध्यप्रदेश) - 470003

दूरभाष : (07582) 297133

ई-मेल : mādhyābhārti.2016@gmail.com

गाँधी का इतिहास चिन्तन : आधुनिकता के समक्ष सनातनता का सत्याग्रह <i>आशुतोष</i>	161
संपोष्य विकास की गाँधी दृष्टि और उसका आधुनिक परिप्रेक्ष्य <i>श्यामल किशोर</i>	166
गाँधी का अहिंसा दर्शन और नयी वैश्विक व्यवस्था <i>संजय कुमार</i>	173
21वीं शताब्दी में गाँधी-विचार का औचित्य <i>पंकज सिंह</i>	181
गाँधी के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संबंधी विचारों की समालोचना <i>अखिल कुमार गुप्ता</i>	196
भारत में सामुदायिक जन लामबन्दी और गाँधी की नई तालीम <i>ब्रजेन्द्र कुमार</i>	203
महिलाओं का राजनीतिक सबलीकरण और गाँधी <i>आफरीन खान</i>	215
Recontextualizing Māhātmā Gāndhī's Sātyāgrāhā ānd Swārāj in Contemporary Cultural Studies <i>Nishtha Saxena</i>	226
Swādeshi : The Sure Meāns of Erādicātion of Corruption <i>Ashok Vohra</i>	235
Gāndhiān Thoughts on Subāltern Discourse <i>R.C. Sinha</i>	249

भारत में सामुदायिक जन लामबन्दी और गाँधी की नई तालीम

ब्रजेन्द्र कुमार

प्लासी के युद्धोपरांत ईस्ट इण्डिया कंपनी ने देश में राजनैतिक रूप से अपने आपको सशक्त करने के लिए अपनी बुनियाद दो तरह से खड़ी करने की कोशिश की- पहला आर्थिक आधार पर मजबूत होने के लिए वित्तीय संसाधनों पर नियंत्रण प्राप्त करना। दूसरा तरीका जो अपनाया गया उसमें देश के अन्दर एक ऐसे वर्ग या व्यक्तियों का सहयोग पाना जो समाज में किसी न किसी रूप में अपनी मजबूत दावेदारी तथा प्रभुत्व रखते हैं। इस वर्ग में समय के साथ-साथ कंपनी तथा ब्रिटिश सरकार के द्वारा परिवर्तन किया जाता रहा।

उपनिवेशकालीन भारत में कंपनी सरकार द्वारा जिस आधुनिक शिक्षा की शुरूआत एक नीतिगत रूप में की थी उस शिक्षा ने भारत में एक इस प्रकार के सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक रूपान्तरण को जन्म दिया, जिससे परम्परागत संस्थाओं और प्रारूपों के विखण्डन की एक प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। इस प्रक्रिया के तहत आधुनिक शिक्षा की पहुँच जिन हाथों तक हो सकी उन हाथों को उसने एक ऐसे वर्ग के रूप में परिणत कर दिया जो एक नये शासक वर्ग का अनुसरणकर्ता होता जा रहा था।

ब्रिटिश सरकार के द्वारा भारत में जिन आर्थिक औपनिवेशिक नीतियों को अपनाया गया उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था को बर्बाद करके रख दिया था। इन नीतियों के कारण देश में विऔद्योगिकीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई जिससे हस्तशिल्प से जुड़ा हुआ वर्ग बेरोजगार होता गया। दूसरी ओर यूरोपियन माल ने भारतीय बाजारों पर कब्जा कर लिया। इन सबसे बचाने के लिए जरूरी था कि समाज में एक इस तरह के विचार को बढ़ावा दिया जाये, जिससे अपने परम्परागत काम की महत्ता को बढ़ाया जा सके। यह काम शिक्षा के द्वारा बेहतर रूप से किया जा सकता था। अतः देश में एक नयी शिक्षा व्यवस्था की पुर्नरचना आवश्यक समझी गई। इस नई शिक्षा व्यवस्था का सूत्रपात गाँधी के द्वारा किया गया।

गाँधी का मानना था कि औपनिवेशिक शासन ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को बर्बाद करके इसे शहराती लोगों के शोषण का जरिया बना दिया है। अतः वह ग्रामीण जीवन की आर्थिक स्वायत्तता और उसकी राजनीतिक गरिमा को पुनर्स्थापित करना चाहते थे। बुनियादी तालीम से वे बच्चों को उत्पादक कार्य में प्रशिक्षित करते हुए और सहकारी समुदाय के रूप में जीवन-यापन के उपयुक्त सिद्ध होने वाले नजरियों और मूल्यों से उन्हें भरपूर करते हुए गाँव को इस दिशा में विकसित करना चाहते थे।

गाँधी ने 'हिंद स्वराज' में शिक्षा के बारे में लिखा कि “सभ्यता के रोग ने हमें इतना बुरी तरह से जकड़ लिया है कि अंग्रेजी बिल्कुल ही न पढ़ने से हमारा काम चले, ऐसा समय नहीं रहा।” अतः जो लोग अंग्रेजी पढ़